DIDI MANMOHINI JI

दीदी मनमोहिनी जी की विशेषतायें – दादी जानकी जी के शब्दों में

(दीदी जी के पुण्य स्मृति दिवस पर 28 जुलाई 2012 को क्लास में सुनाने के लिए)

1) मुझे दीदी ने शिव शक्ति का बैज पहनाया था। तो याद रहता है कि मैं शिव की शक्ति हूँ। व्हाइट कपड़े पहनना, लाइट रहना, एवरीथिंग राइट करना। कभी चश्मा कैसे पहना, कभी कुछ पहना, कभी कुछ.. हमारे पास बैज के सिवाए और कुछ नहीं है, हमारी पहरवाइस भी सेवा करती है।

2) दीदी ने सिखाया कि हर बात में ट्रस्टी होके कैसे सम्भालना है। अलर्ट रहना सबसे जरूरी है। कभी पढ़ाई में, योग में, सेवा में सुस्ती न आये। दीदी सदा पढ़ाई में रेग्युलर और पंचुअल रही। कभी क्लास में लेट नहीं आई। कर्मातीत बनने वाली आत्मा को ध्यान है निद्राजीत बनने का।

3) दीदी ने सिखाया कि सदा आपस में हमारा सभी के साथ बहुत प्यार हो। सदा सीखने की और सच्चा होके रहने की भावना हो। मैं जो कहूँ सो होवे नहीं, जो बाबा ने कहा है वही हो - यही भावना हो। मुख्य बात है एक दो के लिए रिगार्ड और प्यार का संस्कार जो भरा हुआ है, उससे सुखी हैं।

4) दीदी सदा कहती याद में रहना मेरा काम है। मेरी स्मृति में एक बाबा रहे, सेवा पीछे है। याद में रहने से यात्रा पर हूँ। यात्रा पर हूँ तो जो यात्रा के नियम हैं उन्हें एक्यूरेट पालन करना है। याद की यात्रा में सामने डेस्टीनेशन है। आपेही सब पहुंचेंगे, किसी को कुछ कहने की जरूरत नहीं है।

5) दीदी सदा कहती कभी भी मूड खराब नहीं करना। सीरियस होना या किसी से ईर्ष्या रखना यह बहुत बुरी बला है। प्लीज़ अपने को इसमें इतना सम्भाल के रखो जो बाबा के गीत गाते-गाते गायन योग्य, सिमरण योग्य, पूजनीय योग्य बन जाओ।

6) दीदी रोज़ अमृतवेले 4 बजे योग में हाज़िर हो जाती थी। खुद ही योग कराती थी। कितनी भी बातें होगी कभी कोई बात दीदी के मुख से नहीं सुनी होगी। जो बाबा मम्मा ने सिखाया, दीदी ने प्रैक्टिकल करके दिखाया। बाबा को याद करना सीखना हो तो उन्हें सामने रखो। उनकी सूरत को देखो।

7) दीदी ने आंख दिखाके, इशारे करके मीठा बनना सिखाया। मधुबन के बहुत से भाई बहिनों ने दीदी की पालना ली है। दीदी ने सबको मजबूत बनाया है। विशेषता सबमें हैं, दादी की विशेषता अपनी, दीदी की अपनी लेकिन सर्वगुण सम्पन्न सबको बनना है। अब नहीं बनेंगे तो कब बनेंगे।

8) बाबा हम आपके कदमों पर चलकर आपका नाम रोशन करेंगे। बाबा के कदम पर चलना, यह दीदी ने सिखाया है। श्रीमत सिरमाथे पर हो, दीदी ने बहुत ध्यान दिलाया, कभी मनमत पर चलने नहीं दिया। पढ़ाई पर अटेन्शन पूरा दिया, क्वेश्चन ऐसे निकालती जो सबको फेल कर देती। पढ़ाई में सदा पंचुअल, रेग्युलर रहना, दीदी से सीखा।

9) बाबा के साथ अटूट प्यार, बाबा के अव्यक्त होने के बाद दीदी ऐसी दृष्टि देती थी, जो दीदी की दृष्टि से सबको बाबा की भासना आती थी। विदेशी भाई बहिनों ने भी दीदी की दृष्टि से बहुत अच्छे अच्छे अनुभव किये हैं। दीदी ने बोला कम होगा,

दृष्टि से बहुत भासना दी, अनुभव कराये। शाम को एक्यूरेट योग में आती थी, ऐसे लगता आफिस से बाबा को साथ लेकर योग में आ रही है। इसमें दीदी की पंचुअल्टी देखी।

10) पुरुषार्थ में इन्ज्वाय करना, उसका मजा लेना, दीदी के पुरुषार्थ में कभी थकावट नहीं देखी। पुरुषार्थ है ही बाबा को याद करने का और मुरली का मनन-चिंतन करने का, इसमें दीदी बहुत एक्यूरेट रही। शाम को आफिस में जाओ, ऐसा क्वेश्चन मुरली का पूछेगी, जो सारी मुरली याद आ जाए। यह पास्ट याद आता है, जो वर्तमान में बहुत मदद करता है और बातें पास्ट इज़ पास्ट कर दो, यह बातें पास्ट नहीं की जा सकती। बीती को चितओ नहीं, आगे की रखो न आश, ऐसा सहजयोगी, एक्यूरेट योगी बनना, यह दीदी से सीखा है।

11) ज्ञान का मंथन करना, अच्छी अच्छी बातें दीदी से सदा की है और कोई बात आपस में कभी नहीं की। योग क्या है, ज्ञान की गहराई क्या है, सदा यही रूहरिहान होती। यह बड़ों से सीखा है।

12) जब बाबा अव्यक्त हुआ, दीदी दादी ने मुझे बुलाया, बोली अभी तुम्हें पूना छोड़कर यहाँ रहना पड़ेगा। बाबा ने डायरेक्शन दिया है – दादी मुरली सुनायेगी, क्लास तुम्हें कराना है। दीदी मुझे बुलाकर बताती थी यह बात और स्पष्ट करना। सेवा में सदा उमंग-उल्हास में रहना, बाबा की उम्मीदों को पूरी करना यह दीदी ने कूट कूट कर पक्का कराया।

13) दीदी का यह गीत फेवरेट था - अब घर जाना है...। ऐसे नहीं कहती थी तैयारी करना है, सदैव तैयार रहती थी। घर में रहना माना बाबा के साथ रहना। अन्त में सारा दिन यही धुन लगा दिया। अभी हमको भी यह धुन है, अब घर जाना है लेकिन बाबा को प्रत्यक्ष करके जाना है।

14) दीदी सदा आंख दिखाती, दीदी की आंख देखने से मीठे बन गये, कैसे बोलना है, कैसे सबको खुश करना है, कैसे सबके साथ मिलनसार होकर चलना है। ऐसे ऊपर-ऊपर से नहीं, हड्डी सेवा करना है। वारिस बनाना दीदी से सीखो। पूरा स्वाहा करा देती। जो यज्ञ के लिए मिला वह सीधा यज्ञ में जाये, यह संस्कार दीदी ने डाल दिये, एक पापड़ भी अपने लिए नहीं रखा। जो यज्ञ के लिए करे वह यज्ञ में सफल हो। जो करे वह गुप्त करे।

15) दीदी की विशेषताओं की बहुत बड़ी माला है, कभी एक पेनी एक रूपया भी व्यर्थ नहीं जाने देगी। कोई सफल करे कोई व्यर्थ गंवाये, यह भी बोझ चढ़ता है। सफल करने वाले को एक का पदमगुणा बाबा देगा। यज्ञ में सफल करने वाले को बाबा देता है। गरीब का एक रूपया, साहूकार का एक हजार.. इसके भी हमारे पास मिसाल हैं, जिनको हड्डी सुख मिला है।

16) दीदी का नाम गोपी था, गोपी का पार्ट पहले दीदी ने ही बजाया। कितने बंधनों को काटकर बाबा के पास आ गई। फिर सिम्पल रहना सिखाया, लट्ठे का कपड़ा पहनाया। बाबा दीदी को भण्डारे में भेजता था देखो भोजन बनाते वा खाते कोई आपस में बात तो नहीं करते हैं। दीदी ऐसे आती थी जैसे कोई सी.आई. डी. आफीसर आये। सब सावधान हो जाते थे। हमको देखकर भी कोई सावधान, खबरदार हो जाये। ऐसी थी हमारी मीठी दीदी।

17) सर्व सम्बन्ध एक बाबा के साथ कैसे हों, वह दीदी से सीखा है। दीदी सदा एकव्रता होकर रही इसलिए दीदी में प्युरिटी की पर्सनैलिटी झलकती थी। इतनी हमारी पर्सनैलिटी में प्योरिटी हो, तो व्यर्थ ख्याल आ नहीं सकता। इतनी ऑनेस्टी हो, नि:स्वार्थ भाव हो। मान मर्तबे की भूख न हो।

18) निराकारी स्थिति में रहकर, आकारी सूक्ष्मवतनवासी का अनुभव करते, साकार सृष्टि में सेवा अर्थ पार्ट बजा रहे हैं, इसमें दीदी बहुत एक्यूरेट रही है। बाबा की शिक्षायें प्रैक्टिकल धारण करने में दीदी ने साथ दिया है। बाबा ने मम्मा के शरीर छोड़ने बाद दीदी को सेवा की जवाबदारी दी, दीदी को मधुबन में बिठा लिया। दीदी की एक्यूरेसी, याद में रहने की, श्रीमत पर चलने की, यज्ञ में सब कायदेअनुसार चलें वह सबका अटेन्शन खिंचवाया है।

19) जैसे दीदी दादी ने सारा दिनरात सेवायें की होंगी, सेवा द्वारा सुख देके सन्तुष्ट करें, सदा खुश रहें, कैसी भी बात आवे पर निराशाई न आये, उमंग न चला जाये, उम्मींद से नाउम्मींद न बन जायें, कोई अच्छे पुरूषार्थियों को देख ईर्ष्या का अंश न आये, द्वेष भाव न हो, थकान न हो। दीदी ने प्रैक्टिकल में इन सब शिक्षाओं का स्वरूप बनकर दिखाया और अपने स्वरूप से सबको सिखाया।

20) हमारे सर्व संबंध एक बाबा से जुड़ाने के निमित्त हमारी मीठी दीदी रही है। बाबा के साथ दीदी का सखा संबंध रहा है। हमेशा कहती थी तुम बाबा को सखा बनाकर याद करो ना। ऐसे सूखी याद नहीं करो। उसे साजन समझकर याद करो। श्रीमत सदा सिरमाथे पर रहे। श्रीमत की वैल्यू दीदी ने कान पकड़ के सिखाई है, मनमत चल नहीं सकती, तभी बाबा ने यहाँ तक बैठने के लायक बनाया है। बाबा ने आप समान बनाने की सुत्ती घोट के पिलाई है।

21) एक बार बाबा ने कहा था - बच्ची बाबा कहे कुएं में कूद जाओ, तो कूदेंगी! दीदी ने उसी समय कहा हाँ बाबा। तो बाबा ने कहा बच्ची ऐसे बाप कभी कह सकता है क्या? इसमें भी पहचान चाहिए। तो हर कदम दीदी ने श्रीमत पर उठाया। विश्व सेवा के लिए दीदी ने निमित्त बनाया। अच्छा - ओम् शान्ति।